सम्मान देते हैं और उनके अपशब्द बोलने पर भी कभी उद्वेलित नहीं होते। सत्य बोलने वाले सहनशील भी होते हैं। सहनशीलता सत्य का आभूषण है।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र अपने सत्य के साथ अपने कर्तव्य का पालन भी करते हैं। इसलिए वे सर्वोत्कृष्ट हैं। सत्य के साथ परिस्थितियां भी जुड़ी रहती हैं। व्यक्ति केवल सत्य बोलने का अभिमान करके अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाये तो वह न समाज के लिए, न देश के लिए उपयोगी कहलायेगा।

सत्य को सापेक्ष कहा गया है। महाभारत के युद्ध में युधिष्ठिर ने एक बार असत्य कहा था- अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो वा? मृत्यु के बाद जब यमराज के समक्ष युधिष्ठिर उपस्थित होते हैं तो उन्हें [illegible] आयोजित [illegible]णाम नर्क दर्शन के रूप में मिलता जाएगा। [illegible] महाविद्यालय [illegible] में और श्रीकृष्ण के कहने से प्राप्त [illegible] ही था।

आख्यानक के [illegible] राहे पर कसाई गाय के पीछे भाग रहा था। मार्ग में [illegible] क्त गाय और कसाई को देखता है। कसाई व्यक्ति से पूछता है कि गाय किधर गई। व्यक्ति ने गाय को जाते देखा है। अब वह किंकर्तव्यविमूढ़ है। यदि वह सत्य बोलता है तो उसे गौ-हत्या का पाप लगता है। यदि असत्य बोलता है तो भी उसे झूठ बोलने का पाप लगेगा। इस परिस्थिति में व्यक्ति विशेष का विवेक उसकी सहायता करेगा क्योंकि न वहां कोई शास्त्र है न कोई आचार्य न कोई परामर्शदाता। इसीलिए सत्य को सापेक्ष कहा गया है।

वस्तुतः सत्य एक आराधना है, तपस्या है और उसके पालन से ही व्यक्ति क्रमशः आगे बढ़ता है। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में सत्य भिन्न भिन्न होता है। जैसे विद्यार्थी के लिए अध्ययन ही सत्य है। कर्मचारी और अधिकारी के लिए कर्तव्यपालन से बड़ा कोई सत्य नहीं है। सत्य का मार्ग कांटों भरा अवश्य है। परन्तु उन्नति के शिखर तक ले जाने वाला है। वास्तविक सत्य को जानने के लिए शास्त्रों एवं सन्तों का आश्रय लेना चाहिए। सन्त की परिभाषा कवियों ने इस प्रकार दी है- प्रेम जब अनन्त हो गया तो रोम रोम सन्त हो गया। अर्थात् जो सबसे प्रेम करता हो, सब में ईश्वर का दर्शन करता हो वही सच्चा सन्त है और सत्य का मार्ग दिखा सकता है।

डा. रवींद्र नागर

# चांद पर 2010 तक पहुंचेगा चीनी यान

बीजिंग, 27 फरवरी।

चीन ने 2010 तक मानव रहित यान भेज कर चांद पर कदम डालने की तीन चरणों वाली एक महत्वकांक्षी योजना तैयार की है।

राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधित चीन के विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं उद्योग आयोग ने इसकी घोषणा की और बताया कि दूसरे चरण में 2010 तक एक मानव रहित यान चांद पर भेजा जाएगा। समाचार एजेंसी शिन्हुआ के अनुसार चीन राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन के उपनिदेशक सुन लैयान ने बताया कि तीसरे चरण के तहत एक और मानव रहित चीनी यान चांद पर जाएगा जो वहां से मिट्टी के नमूने लाएगा।

सुन ने बताया उपग्रह चंद्रमा की त्रिआयामी तस्वीरें खिचेंगा और साथ ही वहां के उपयोगी तत्वों एवं सामग्रियों का विश्लेषण करेगा और वहां की मिट्टी की जांच करेगा। सुन ने उपग्रह परियोजना को अंतरिक्ष की गहराइयों की थाह लेने की चीन की मुहिम का एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि चांद अंतरिक्ष की पड़ताल के लिए एक मंच का काम करेगा।

नवम्बर 1888 में तमिलनाडु के एक गाँव अयनपटैई में हुआ था। 12 वर्ष की उम्र में अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा विशाखापट्टनम में समाप्त करने के पश्चात् मद्रास विश्वविद्यालय से 1907 में एफ.ए.की डिग्री हासील की। महाविद्यालय की शिक्षा पूर्ण होने पर रमन 'फाईनेन्सीयल सीवील सर्विस' (Financial Civil Service) की परिक्षा में बैठे व उसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनकी नियुक्ती 'डिप्टी एकाऊन्टेट जनरल' के पद पर जून 1907 में कलकत्ता में हुई।

घटना इसी वर्ष की घटना है जब प्रो. रमन कलकत्ता की एक ट्राम में सफर कर रहे थे। तब उनकी नजर 'बो' बाजार में 210 नम्बर के मकान पर लगे साईन बोर्ड पर पड़ी जिस पर लिखा था 'इंडियन एसोसियेशन फॉर दी कलटीवेशन ऑफ साइस'। रमन चलीती ट्राम से उतरे व अपना नाम एसोसियेशन के एक सदस्य के रूप में तत्काल करवाया। यही से उनके शोध कार्य व नॉबल पुरस्कार प्राप्त करने की नींव पड़ी। इस नीव में प्रथम पत्थर रखने वाले थे महेन्द्रलाल सरकार जिन्होने इस संस्था की स्थापना की थी। सरकार की मृत्यु के बाद प्रो. रमन ने इस संस्था को अपना नेतृत्व में लेकर सरकार की परिकल्पनाओं को अपनी विलक्षण आंतरिक क्षमताओं व तकनीकी परिकल्पनाओं के द्वारा एक नया आयाम दिया।

1917 में जब प्रो. रमन 29 वर्ष के हुये उस समय सर असुतोष मुखर्जी ने उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय के भौतिक विभाग में पलीत प्रोफेसर के एर का प्रस्ताव दिया जिसे प्रो. रमन ने सहर्ष स्वीकार किया। इस विश्वविद्यालय में शोध करके भारत रत्न प्रो. रमन का शरीर पंच भैतिक तत्वों मे वीलीन हो गाया।

प्रो. रमन ने अपना अधिकार समय हीरे के संशलेषण प्रकाश व पद्य संगीत के अध्ययन में व्यतीत किया। उनके प्रमुख प्रकाशनों में प्रकाश के मोलिकल का प्रकाश विश्लेषण तानपुर का [illegible] सिद्धांत, एक्स-किरणें [illegible] विश्लेषण तथा वादय [illegible] का नाद सिद्धांत आदि है।

1919 प्रो. रमन 'इंडियन एसोसियेशन फॉर कलटीवेशन ऑफ सांइस' के सचीव चयन हुये। 1924 में रॉयल सोसाइटी के फेलो के रूप में उनका चयन हुआ। ब्रीतानिया सरकार ने 1919 में उन्हें अंग्रेजी की उपाधी देकर सम्मानित किया। 1950 में उन्हें नॉबल पुरस्कार 'रमन इफेक्ट' पर मिला। 1954 में भारत का सर्वोच्च सम्मान 'भरत रतन' प्रो. रमन को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त भी उन्हें अनेक सम्मान व मेडल मिले जो उन्होने अपने इंस्टीट्यूर में रखे।

इंडियन एसोसियेशन फॉर दा कल्टीवेशन ऑफ सांइस में शोध कार्य करते हुये प्रो. रमन ने वैज्ञानिकों की एक सशक्त टीम बनाई जिसमें फोफेसर के एस. कीसनन, के बनर्जी, एस. भगवन्तम्, के आर. रामनाथन, एस.सी. सीरकार, एल.ए.रामदास व एस. के मित्रा प्रमुख थे। जिन्होंने भैतिकी के विभिन्न क्षेत्रों में बहुमुल्य शोध कार्य करके भारत के भैतिकी शोध को विश्व के अग्रणीय पंक्ति में लाकर खाड़ा कर दिया। इसका पूरा श्रेय रमन की जाता है जिन्होंने इन वैज्ञानिको में एक नई चेतना, स्पूर्ति वैज्ञानिक जागृति व दृष्टि अपनी कुशाग्र बुद्धि. कार्य कुशलता व शोध

रमन ने अपने लाभप्रद, अराम दायक, प्रशासनिक वह सम्मानयुक्त पद को त्याग कर प्रोफेसर के पद को स्वीकार करना जिसमें इतना अधिक पैसा भी नही मिलता था। इस बात को प्रमाणिक करता है कि सत्य की खोज करके हमारी अंकाक्षाओं के अनुरूप ज्ञान के मंदिर बनाने वालों को भारत में कमी नहीं है।

[illegible]रत के द्वितीय राष्ट्रपति [illegible] एस. राधाकृष्णन ने प्रो [illegible] के बारे में आपने विचारों को इस प्रकार रखा : वे एक महान् शिक्षक है, उनका ज्ञान भौतिक विज्ञान तक ही सीमित नहीं [illegible] विशेषज्ञ की दुनिया में रमन का ज्ञान प्रसंशनिय है। ये श्रेष्ठ बद्धिमता व सत्यनिष्ठा का अनुठा संगम हैं जिसने लोगों का दिल जीतने की अद्भूत क्षमता है। से हमारे सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक है और हम उत्सुकता से आशा करते है कि आने वाले अनेक वर्षें में भारत में वैज्ञानिक उन्नति के लिये ये मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

'रमन इफेक्ट' ने प्रकाशिकी के क्षेत्र में कांति ला दी। आज 'रमन स्पेक्टो स्कोपीं ने चिकित्सा में रोग की पहचान, अंतरिम संश्लेषण, प्रकाश तंतु, सूक्ष्म जीवाणुओं के अध्ययन के क्षेत्र में इतना महत्वपूर्ण हो गया है जितना शायद प्रो. रमन ने भी कभी नहीं सोचा था। 'लेजर' के रूप में विकसित किया गया अपकरण इतना महत्वपूर्ण यंत्र बन गया है कि आज इसका उपयोग भैतिकी रसायन, चिकित्सा, जीवकि ज्ञान और खगोल शास्त्र में एक अहम भूमिका निभा रही है।

प्रो. रमन एक सीधे-सीधे, सरल हृदय वाले भारतीय थे। जो साधारण कोट, जो कि उन्होने 1930 नॉबल पुरस्कार प्राप्त कर फहराया।

## पायलटों को कैंसर का खतरा

वैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की है कि हवाई जहाज के चालक दल के सदस्यों को त्वचा और स्तन कैंसर का खतरा रहता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ आइसलैंड के शोधकर्ताओं के मुताबिक पांच साल या इससे अधिक समय तक काम करने वाले चालक दल के सदस्यों के कैंसर से पीड़ित होने की आशंका ज्यादा रहती है। इसी तरह के दूसरे अध्ययन में [illegible] सेंटर फॉर पब्लिक हेल्थ के शोधकर्ताओं ने पाया कि चालक दल के पुरुष या महिला सदस्यों को त्वचा कैंसर होने का खतरा रहता है।

## एड्स पीड़ित बढ़ रहे हैं

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की नई रिपोर्ट के अनुसार हर 14 सेकंड में दुनिया में कोई न कोई व्यक्ति एचआईवी वायरस से संक्रमित होता है। 15 से 24 वर्ष के 6000 युवा रोज एचआईवी का शिकार बनते हैं।

ज्ञात हो कि एचआईवी से संक्रमित लोगों में आधे तो 25 वर्ष के युवा होते हैं, इनमें भी बड़ी संख्या विकासशील देशों में रहने वाली महिलाओं की है।

इस रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जनसंख्या कोष के कार्यकारी निदेशक थोराया अहमद उबेद ने कहा है कि एड्स की अंतरराष्ट्रीय विभीषिका से निपटने के लिए आपात योजना की जरूरत है।

उन्होंने आगे कहा कि 15 वर्ष से कम आयु के दुनियाभर में सवा करोड़ बच्चे एड्स के कारण अपने माता-पिता में से एक या दोनों को खो चुके हैं। यह युवाओं की बीमारी बन गई है, गरीबी, स्त्री से भेदभाव तथा सूचना व शिक्षा के अभाव में इस बीमारी को बढ़ावा मिल रहा है।

जैसी यूटिलिटीज का प्रयोग करें। यह आपके प्रोग्राम्स का निरीक्षण करके उन्हें तेजी से लोड करता है, हार्ड डिस्क पर आप अपनी हार्ड डिस्क की कार्यक्षमता तो बढ़ा ही सकते हैं साथ ही इनसे आपकी डिस्क की उम्र में भी वृद्धि होगी।

# भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली की सराहना

वाशिंगटन, 27 फरवरी।

अमेरिकी संसद की अंतरराष्ट्रीय मामलों की समिति ने भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली की सराहना करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया है।

भारत के गणतंत्र दिवस पर भारत को बधाई देने वाले इस प्रस्ताव को प्रसिद्ध सांसद एड रोयेश सहित प्रतिनिधि सभा के 32 सदस्यों ने पेश किया जिसे बड़ी संख्या में समर्थन मिला। प्रस्ताव में कहा गया कि भारत और अमेरिका के लोग लोकतांत्रिक सिद्धान्तों के प्रति कृतसंकल्प है और कई मूल्यों में उनके विचार समान हैं।

रोयेश ने भारत और अमेरिकी संविधान के बीच कई समानताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत के संविधान निर्माता हमारे संविधान निर्माताओं से प्रभावित थे और कई मूल्यों को भारतीय संविधान में जगह दी गयी। रोयेश ने एक बयान में कहा, आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। विश्व की ताकत बनने की उसकी क्षमता दक्षिण एशिया में शांति और स्थिरता के अवसर पैदा कर रही है। उन्होंने कहा कि पिछले माह समिति ने भारत के विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा के साथ अंतरिक्ष एवं विज्ञान में द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की। उन्होंने कहा यह प्रस्ताव इस महत्वपूर्ण रिश्ते को प्रगाढ़ करने में संसद की इच्छा का परिचायक है।

# भारतीय वैज्ञानिक डर्टी बम के दुष्प्रभावों से निपटने में सक्षम

मुंबई, 27 फरवरी।

उग्रवादियों द्वारा 'डर्टी बम' के निर्माण के लिए कैंसर के इलाज में प्रयुक्त किए जाने वाले टेलीथेरेपी संसाधन बेहतर विकल्प नहीं हैं, लेकिन अगर वह इन बमों के निर्माण के लिए इन संसाधनों का प्रयोग करते हैं तो वह कुछ ही मिनटों में घातक विकिरण की चपेट में आ जाएंगे।

यह बात परमाणु वैज्ञानिकों ने कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित एक खबर पर चर्चा के दौरान कही। खबर में अमेरिका के वाशिंगटन स्थित हेनरी एल स्टिमसन सेंटर द्वारा किए गए एक अध्ययन का जिक्र है जिसमें टेलीथेरेपी संसाधनों और पांच पौंड टीएनटी से बने डर्टी बम के दिल्ली के महत्वपूर्ण हिस्सों में विस्फोट के संभावित प्रभावों को रेखांकित किया गया है।

वैज्ञानिकों ने कहा कि अगर उग्रवादी डर्टी बम बनाने का खतरा उठाते हैं तो लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है क्योंकि हम उसके दुष्प्रभावों से निपट सकते हैं। 50 के दशक से हम रेडियोधर्मी तत्वों पर काम और उनका प्रयोग करते आए हैं।

एटॉमिक एनर्जी रेगुलेटरी बोर्ड के पूर्व सचिव डॉ.के एस पार्थसारथी ने कहा कि डर्टी बम के दुष्प्रभावों से निपटने में आपात निरीक्षण क्षमता सक्षम है और हमारे परमाणु केंद्रों में इसका प्रयोग हो रहा है।